[सूक्तियों की सदर्भ सहित व्याख्या]

[लक्ष्यवेधपरीक्षा]

1. नैतच्छक्यं त्वया बोद्धुं लक्ष्यमित्येव कुत्सयन् ।

सन्दर्भ :— प्रस्तुत सूक्ति महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित 'महाभारत' से संकलित तथा पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'लक्ष्यवेधपरीक्षा' नामक पाठ से अवतरित है।

अर्थ :— यह लक्ष्य तुमसे वेधा नहीं जा सकता।

व्याख्या :— द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को फटकारते हुए कहते हैं — .....

2. शिरः पश्यामि भासस्य न गात्रमिति सोऽब्रवीत् ।

अर्थ — मैं गीध के सिर को देख रहा हूँ, उसके शरीर को नहीं।"

व्याख्या :— द्रोणाचार्य ने अर्जुन से कहा, फिर बताओ तुम इस गीध को देख रहे हो तब अर्जुन ने कहा — .....

3. न तु वृक्षं भवन्तं वा पश्यामीति च भारत ।

अर्थ — मैं न तो वृक्ष को अथवा आपको देख रहा हूँ।

व्याख्या :— द्रोणाचार्य ने अर्जुन से पूछा कि तुम क्या-क्या देख रहे हो तो अर्जुन ने कहा — .....

सूक्ति-सुधा

1. पृथिव्या त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।

सन्दर्भ —
प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'सूक्ति-सुधा' नामक पाठ से उद्धृत है।

अर्थ — पृथ्वी पर तीन रत्न जल, अन्न और सुन्दर वचन हैं।

व्याख्या —
---------- तीन उपयोगी वस्तुओं को रत्न बताते हुए कवि ने कहा है कि इस पृथ्वी पर तीन रत्न जीवन हेतु उपयोगी हैं - जल अन्न और सुभाषित।

2. काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।

अर्थ — सज्जन पुरुषों का समय काव्यशास्त्र के मनोरंजन में जाता है।

व्याख्या —
---------- कवि सज्जन एवं दुर्जन व्यक्तियों के विषय में विवेचना करते हुए कहता है ----.

BA STUDY CLASS

3. मूढ़ैः पाषाण खण्डेषु रत्न संज्ञा विधीयते

अर्थ — मूर्ख लोग पत्थर के टुकड़ों को वास्तविक रत्न मान लेते हैं।

व्याख्या — सांसारिक मूर्ख मनुष्य भौतिक सुखों को ही सच्चा सुख मान लेते हैं। अज्ञान के कारण हीरे, रत्न मणियों आदि पत्थरों के टुकड़ों को ही रत्न मान लेते हैं जबकि पृथ्वी पर मात्र तीन ही सात्विक रत्न हैं — जल अन्न और सुन्दर वचन।

4. क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणं।

अर्थ — शारीरिक आभूषण निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। वाणी रूपी आभूषण ही सच्चा आभूषण है।

व्याख्या — मनुष्य स्वयं को आकर्षिक दिखाने हेतु विभिन्न प्रकार के भौतिक आभूषण धारण करता है परन्तु सारे आभूषण निश्चित रूप से एक दिन नष्ट हो जाते हैं, वाणी ही सच्चा आभूषण है।

5. सूक्ति—भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'सूक्ति-सुधा' पाठ से उद्धृत है।

व्याख्या—इस सूक्ति में (सुन्दर कथन) का वर्णन करत हुए देववाणी संस्कृत भाषा के महत्त्व का वर्णन किया गया है कि संस्कृत भाषा सम्पूर्ण भाषाओं में श्रेष्ठ, मधुर एवं सरस है। इसे देववाणी कहा गया है।

6. सूक्ति—पुत्रो न यः पण्डितमण्डलाग्रणीः।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'सूक्ति-सुधा' पाठ से उद्धृत है। इसमें सुयोग्य पुत्र की पहचान स्पष्ट की गयी है।

व्याख्या—संसार में कोई भी पुत्र, विद्वानों द्वारा सम्मानित होकर ही अपने पिता एवं कुल को यश-प्राप्ति करा सकता है। यदि पुत्र विद्वानों की सभा में अग्रणी न हो तो उससे पिता को कोई यश प्राप्त नहीं होगा। तब ऐसा पुत्र तो न होने के ही समान है।

7. सूक्ति—वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'सूक्ति-सुधा' पाठ से उद्धृत है।

व्याख्या—कवि ने इस सूक्ति में मनुष्य के लिए सबसे उत्तम आभूषण वाणी को ही बताया है। वाणी मनुष्य के लिए एक आम रत्न है, जो जहाँ चाहे धारण कर सकता है। मनुष्य अपनी वाणीरूपी रत्न को सब जगह देदीप्यमान कर सकता है। वह कभी नष्ट नहीं होती, इसलिए सभी आभूषणों में श्रेष्ठ आभूषण वाणी ही है।

8. सूक्ति—वसुमतीपतिना नु सरस्वती।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'सूक्ति-सुधा' पाठ से उद्धृत है।

व्याख्या—कवि प्रस्तुत सूक्ति में बताता है कि पृथ्वीपति राजा के द्वारा भी सरस्वती (विद्या) नहीं छीनी जा सकती है। सर्वशक्ति राजा निरंकुश होता है। वह किसी का सर्वस्व छीन सकता है किन्तु वह भी किसी के ज्ञान, विद्या को छीनने में असमर्थ होता है।

9. सूक्ति—लक्ष्मीर्न या याचकः दुःखहारिणी।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'सूक्ति सुधा' नामक पाठ से उद्धृत है।

अर्थ—जो लक्ष्मी याचक का दुःख दूर करने में समर्थ नहीं है, वह व्यर्थ है

विद्यार्थिचर्या

1. सूक्ति—एकाकी चिन्तयानो हि, परं श्रेयोऽधिगच्छति॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति 'मनुस्मृति' से संकलित हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'विद्यार्थिचर्या' नामक पाठ से अवतरित है। इसमें कल्याण-प्राप्ति का उपाय बताया गया है।

व्याख्या—जिसका मन एकाग्र होता है, वह उचित और अनुचित को भी अच्छी प्रकार समझ लेता है तथा अनुचित को त्यागकर उचित को अपनाता है, जिससे फल की सिद्धि तो होती है, साथ ही आनन्द की अनुभूति भी होती है। मन की एकाग्रता के लिए एकाकी चिन्तन की आवश्यकता होती है अर्थात् जो व्यक्ति एकाकी चिन्तन करता है, उसका मन एकाग्र हो जाता है और ऐसा व्यक्ति परम कल्याण को प्राप्त करता है।

2. सूक्ति—सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति 'मनुस्मृति' से संकलित हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'विद्यार्थिचर्या' नामक पाठ से उद्धृत है। इसमें सुख और दुःख के लक्षण बताये गये हैं।

व्याख्या—जो व्यक्ति पराधीन होता है, वह अपने मन के अनुसार कार्य नहीं कर पाता, इससे उसका आत्मविश्वास डगमगा जाता है और वह हतोत्साहित हो जाता है। इसका परिणाम होता है—दुःख। पराधीन व्यक्ति को चाहे कितना ही सुख और ऐश्वर्य क्यों न मिल जाय, परन्तु हीनभावना के कारण वह दुःख का ही अनुभव करता है। इसके विपरीत जो स्वतन्त्र है, वह सब प्रकार से सुख का अनुभव करता है। अपने कार्य को स्वतन्त्रता से करने के कारण उस व्यक्ति में आत्मविश्वास उभरता है और इसका परिणाम होता है सुख। अतः पराधीनता में दुःख है तथा स्वाधीनता में सुख होता है। कहा भी गया है—पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

3. सूक्ति—सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति 'मनुस्मृति' से संकलित हमारी पाठ्य-पुस्तक 'सस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'विद्यार्थिचर्या' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके माध्यम से कवि सनातन धर्म की सबसे बड़ी विशेषता को प्रस्तुत करता हुआ कहता है—

व्याख्या—अपने सामाजिक एवं आध्यात्मिक जीवन को सफल व सुखी बनाने के लिए, मनुष्य को विभिन्न व्यक्तियों के सम्पर्क में आना पड़ता है और विचारों का आदान-प्रदान करना होता है। जीवन को सुखमय बनाने के लिए मनुष्य को सदैव सत्य बोलना चाहिए, परन्तु वह सत्य भी प्रिय होना चाहिए, ऐसा न हो कि वह सत्य अप्रिय हो और दूसरों के लिये कष्टदायक हो।

4. सूक्ति—अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्॥
***अथवा* आयुर्विद्या यशोबलम्।**

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'विद्यार्थिचर्या' नामक पाठ से उद्धृत है।

व्याख्या—विद्यार्थियों को दैनिक जीवन में गुरुजनों एवं वृद्धों की सेवा करनी चाहिए, यही निर्देश उन्हें दिया गया है, क्योंकि उनकी सेवा करनेवाले विद्यार्थी की आयु, विद्या, यश और शक्ति ये चार वस्तुएँ निरन्तर बढ़ती रहती हैं।

5. सूक्ति—न स्नानमाचरेत् भुक्त्वा न तुरो न महानिशि॥

[2017 AT]

सन्दर्भ—प्रस्तुत सारगर्भित सूक्ति 'मनुस्मृतिः' से संकलित हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'विद्यार्थिचर्या' पाठ से अवतरित है। इसमें बताया गया है कि स्नान किसको नहीं करना चाहिए और कब नहीं करना चाहिए।

व्याख्या—मनु जी महाराज कहते हैं कि भोजन करने के बाद में स्नान नहीं करना चाहिए, बीमार आदमी को स्नान नहीं करना चाहिए। आधीरात के समय स्नान नहीं करना चाहिए। वस्त्रों सहित निम्नतर स्नान नहीं करना चाहिए तथा अज्ञात तालाब में कभी भी स्नान नहीं करना चाहिए।

6. सूक्ति—ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'विद्यार्थिचर्या' नामक पाठ से अवतरित है।

अर्थ—धर्म और अर्थ का विचार करना चाहिए।

व्याख्या—इस सूक्ति में बताया गया है कि विद्यार्थियों को ब्रह्म मुहूर्त में जागना चाहिए और धर्म तथा अर्थ का विचार करना चाहिए। विद्यार्थी को अन्य उपयोगी बातों का भी ध्यान रखना चाहिए।

7. सूक्ति—शतं वर्षाणि जीवति।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'विद्यार्थिचर्या' नामक पाठ से उद्धृत है। इसमें दीर्घायु प्राप्ति के उपाय पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि सभी प्रकार के लक्षणों से हीन होते हुए भी जो व्यक्ति सदाचारी है, श्रद्धावान् है और दूसरों के गुणों में दोष नहीं ढूँढ़ता, वह इस लोक में सौ वर्ष तक जीता है।

गीतामृतम्

1. सूक्ति—कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित 'महाभारत' से संकलित हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'गीतामृतम्' पाठ से उद्धृत है। इसमें कृष्ण भगवान् अर्जुन को कर्म का महत्त्व समझाते हैं।

व्याख्या—भगवान् कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि कर्म में ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं। वास्तव में जिस व्यक्ति का ध्यान कर्म में होता है, वह पुरुषार्थी होता है और उसमें आत्मविश्वास भरपूर मात्रा में रहता है। अगर उसे फल की प्राप्ति भी नहीं होती तो उसे हताशा नहीं होती, दूसरी तरफ कर्महीन व्यक्ति का ध्यान फल पर ही लगा रहता है, उसे कर्म करने में आनन्द की अनुभूति नहीं होती। वह सोचता है कि कर्म कम करना पड़े और फल अधिक प्राप्त हो जायँ। उसमें सदा भय बना रहता है कि कहीं ऐसा न हो कि उसे फल न

मिले। साथ ही फल न मिलने पर वह हताश और दु:खी हो जाता है, अत: मानव को कर्म की ओर ही ध्यान रखना चाहिए और फल की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

सूक्ति—समत्वं योग उच्यते।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित 'श्रीमद्भगवद्गीता' से संकलित हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'गीतामृतम्' पाठ से उद्धृत है। इसमें भगवान् कृष्ण अर्जुन को योग के विषय में बताते हैं।

व्याख्या—सफलता और असफलता, दु:ख और सुख, गरीबी और अमीरी को समान भाव से समझना ही समत्व भाव कहलाता है। जो व्यक्ति दु:ख में हताश नहीं होता और सुख में अहंकारी नहीं होता, उसे समत्व भाववाला समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति ज्ञानी होता है। वह जानता है कि दु:ख के बाद अनिवार्य रूप से सुख आता है और सुख के बाद अनिवार्य रूप से दु:ख आता है, फिर दु:ख और सुख में समान भाव क्यों न रखा जाय? कृष्ण भगवान् इस समत्व भाव को योग कहते हैं, क्योंकि योग द्वारा मन एकाग्र होता है और एकाग्र मनवाला ही समत्व भाव से युक्त हो सकता है।

3. सूक्ति—श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित 'श्रीमद्भगवद्गीता' से संकलित हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'गीतामृतम्' पाठ से उद्धृत है। इसमें भगवान् कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हैं कि ज्ञान श्रद्धा से प्राप्त होता है।

व्याख्या—ज्ञान गुरु से प्राप्त होता है। ज्ञान-प्राप्ति के लिए गुरु के प्रति श्रद्धा का भाव अवश्य होना चाहिए। श्रद्धा का भाव उसी व्यक्ति में होता है, जो विनयशील होता है। जिस व्यक्ति के हृदय में श्रद्धा भाव नहीं होता, उसके हृदय में अहंकार होता है। अहंकारी व्यक्ति कभी भी ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता, अत: श्रीकृष्ण का यह कथन कि श्रद्धा से ही ज्ञान प्राप्त होता है, पूर्ण रूप से स्वाभाविक एवं व्यावहारिक है। ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त ही उसे लोकोत्तर शान्ति प्राप्त होती है।

4. सूक्ति—न सुखं संशयात्मनः।

अथवा संशयात्मा विनश्यति।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित 'श्रीमद्भगवद्गीता' से संकलित हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'गीतामृतम्' पाठ से उद्धृत है। इसमें श्रीकृष्ण अर्जुन को संशय न करने का उपदेश देते हैं।

व्याख्या—जो व्यक्ति संशय में पड़ा रहता है वह कभी सटीक निर्णय नहीं ले पाता है और न ही उसमें आत्मविश्वास का भाव प्रबल होता है। ऐसा व्यक्ति सदा हताश रहता है तथा दुःखमय जीवन व्यतीत करता है। इसलिए व्यक्ति को संशय नहीं करना चाहिए, तभी वह सुख को प्राप्त कर सकता है और आनन्दमय जीवन जी सकता है। ज्ञानी व्यक्ति संशय से दूर रहता है। इसलिए ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है।

-योगस्थः कुरु कर्माणि।

अथवा योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं व्यक्त्वा धनञ्जय।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सारगर्भित सूक्ति महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित 'श्रीमद्भगवद्गीता' से संकलित तथा हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'गीतामृतम्' पाठ से उद्धृत है। इसमें महर्षि वेदव्यास योग की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि—

व्याख्या—भगवान् कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि हे अर्जुन! तुम योग में स्थिर होकर कर्म के प्रति फल के मोह को छोड़कर, सफलता एवं असफलता में

समान भाव रखते हुए कर्म करो क्योंकि सफलता-असफलता, हानि-लाभ, जीवन-मरण आदि में समानता का भाव रखना ही योग है।

6. सूक्ति—निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव!

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'गीतामृतम्' नामक शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इसमें भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि मुझे किस प्रकार का मनुष्य प्रिय है।

व्याख्या—हे अर्जुन! जो व्यक्ति संसार के सभी प्राणियों से प्रेम करता है, उनसे किसी प्रकार का द्वेष अथवा वैरभाव नहीं रखता है, वह मुझे प्रिय है; क्योंकि सभी प्राणियों को मैंने ही बनाया है। फिर, मेरे द्वारा बनायी वस्तु के प्रति वैर अथवा ईर्ष्या-द्वेष रखना तो परोक्ष रूप से मुझसे वैर रखने के समान है; तब ऐसा व्यक्ति मुझे प्रिय क्यों होगा। संसार में जो कोई भी व्यक्ति यह चाहता है कि

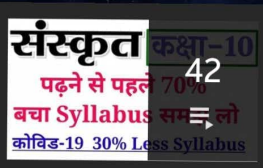

कक्षा -10 संस्कृत|Sanskrit Class 10th|up board sanskrit|sanskrit gadya b...
Gyansindhu Coaching Classes
Updated yesterday

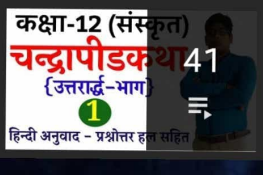

कक्षा 12 संस्कृत|UP Board class 12th sanskrit| Raghuvansh mahakavyam...
Gyansindhu Coaching Classes
Updated today

उस पर मेरी कृपा बनी रहे तो उसे अपने मन से ईर्ष्या-द्वेष की भावनाओं को निकाल फेंकना चाहिए।

7. सूक्ति—ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।

अथवा श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्।

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत पद्य पीयूषम्' के 'गीतामृतम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। यहाँ ज्ञान प्राप्ति के अधिकारी के विषय में बताया गया है।

व्याख्या—जो व्यक्ति अपनी इन्द्रियों पर अधिकार रखता है तथा सच्चे ज्ञान हेतु प्रयत्नशील रहता है, ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा रखता है, वही ज्ञान प्राप्त करता है तथा ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त ही उसे लोकोत्तर शान्ति प्राप्त होती है।

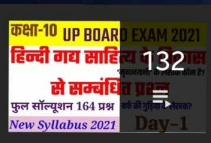

हिंदी -10th |Daily Classes 2021|New Syllabus|UP BOARD EXAM 2021
Gyansindhu Coaching Classes
Updated 3 days ago

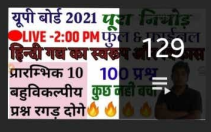

साहित्य हिंदी -12th |Daily Live Classes 2021|New Syllabus| UP BOARD EXAM 2021
Gyansindhu Coaching Classes
Updated 3 days ago

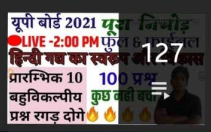

सामान्य हिंदी -12th |Daily Live Classes 2021|New Syllabus|UP BOARD EXA...
Gyansindhu Coaching Classes
Updated 3 days ago